

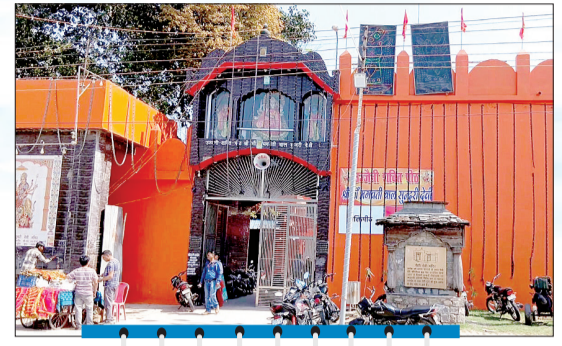
# शब्द रंग

## जहांआरा के सपनों में आई थीं मां बाल सुंदरी

औरंगजेब की बहन जहांआरा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। औरंगजेब ने बड़े-बड़े वैद्य और हकीमों को बुलाया, लेकिन उसकी बहन पर दवाओं का कोई असर नहीं हुआ। कुछ दिनों बाद औरंगजेब की बहन के सपने में मां बाल सुंदरी ने बाल रूप में दर्शन दिए। मां ने सपने में आकर कहा कि उसका भाई औरंगजेब मंदिर का जीर्णोद्धार कराए, तो वह पूरी तरह से स्वस्थ हो जाएगी। अगले दिन यह बात जहांआरा ने औरंगजेब को बताई, जिसके बाद औरंगजेब ने तुरंत मंदिर के लिए अपने श्रमिक भेजकर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। मंदिर के ऊपर बनी मस्जिद नुमा आकृति एवं तीन गुंबद इस बात को प्रामाणिक करते हैं।

## समय के साथ मंदिर का किया जा रहा जीर्णोद्धार

जैसे-जैसे समय गुजरता गया मंदिर का भी जीर्णोद्धार होता रहा। आज मंदिर का स्वरूप काफी हद तक बदल गया है। मुख्य पंजा विकास के मुताबिक इस बार श्रद्धालुओं के सहयोग से मंदिर परिसर में यात्रियों की सुविधा के लिए दो नए यात्री निवास बनाए गए हैं, जहां श्रद्धालु निःशुल्क ठहर सकेंगे। इन यात्री निवासों में पंखों सहित अन्य मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही मुंडन संस्कार के लिए एक बड़ा हॉल भी तैयार किया जा रहा है ताकि छोटे बच्चों और उनके परिवारों को भीड़भाड़ से अलग व्यवस्थित स्थान मिल सके। इसके साथ मंदिर के दक्षिण द्वार के पास श्रद्धालुओं के लिए एक नया प्याऊ बनाया जा रहा है। इसके लिए करीब 300 फुट गहरा बोर कराया गया है।



## मेले में बरेली और झारखंड की मशहूर है लाठी

चैती मेले में एक दशक पूर्व तक लाठी-डंडों का बाजार खासा प्रसिद्ध था। लोग सालभर इसका इंतजार करते थे। खासतौर पर बरेली और झारखंड की लाठियां मशहूर थीं। लाठी कारोबारी वहां से लाठी थोक में लेकर आते थे।

## वर्ष 2018 से मेले का आयोजन करा रहा प्रशासन

वर्ष 2018 से पूर्व मंदिर के पंडाओं द्वारा मेले का आयोजन किया जाता था, लेकिन वर्ष 2018 के बाद प्रशासन मेले का आयोजन कर रहा है। हालांकि मेले का आयोजन कौन करेगा इसका वाद हाईकोर्ट में अभी भी विचाराधीन चल रहा है, लेकिन प्रशासन के मेले आयोजन करने के बाद दुकानदारों को मेले में दुकान लेने के लिए भारी कीमतें चुकानी पड़ रही है।

# शक्तिपीठों में से एक मां बाल सुंदरी

## मंदिर में गिरी थी माता सती की बायीं भुजा

मुख्य पंजा विकास अभिनेत्री ने बताया कि चैती परिसर में भगवान विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से माता सती के अंगों को काट दिए जाने के बाद माता की बायीं भुजा यहां गिरी थी। तब यहां माता की कोई मूर्ति नहीं, बल्कि एक शिला पर उनकी बायीं भुजा की आकृति गढ़ी हुई है, जिसकी श्रद्धालु पूजा करते हैं।

## अष्टमी से उमड़ती है श्रद्धालुओं की भीड़

मुख्य पंजा विकास बताते हैं कि शाक्य संप्रदाय से संबंधित अधिकांश मंदिरों में नवरात्रि में मेले लगते हैं। इसी तरह मां बाल सुंदरी मंदिर भी नवरात्रि में अष्टमी, नवमी व दशमी के दिन श्रद्धालुओं की भारी संख्या में भीड़ उमड़ती है। माता पक्काकोट मंदिर से सप्तमी की अर्धरात्रि को पहुंचती है।

## मंदिर परिसर में स्थित है खोखला कदंब वृक्ष

लोक मान्यता अनुसार जो लोग इस मंदिर के दर्शन पंजा है, उनके पूर्वज मुगलों के समय से यहां आए थे, तभी से मां बाल सुंदरी मंदिर में पूजा-अर्चना करते आ रहे हैं। इस मंदिर परिसर में एक कदंब वट, पीपल आदि के पेड़ स्थित हैं। कदंब का तना और पतली टहनियां तक सब खोखला है। पंजा पेड़ के संबंध में मान्यता बताते हैं कि एक बार एक महात्मा आए उन्होंने मंदिर के पंजा को शक्ति दिखाने को कहा, तो पंजा ने कदंब के पेड़ पर सरसौ मारी तो पेड़ तुरंत सूख गया। उन्होंने फिर उसे हरा करने को कहा, तो पंजा ने पानी छिड़का, इसके बाद पेड़ हरा हो गया, लेकिन पेड़ खोखला रह गया।



कुंदन बिष्ट काशीपुर

## बुक्स समाज की कुलदेवी

आदि शक्ति की बाल रूप में पूजा होने के कारण ही इसे बाल सुंदरी कहा जाता है। मां बाल सुंदरी बुक्स समाज की कुलदेवी है। आज भी बुक्स समाज के लोग वर्ष में एक बार माता की विधिवत पूजा करने आते हैं और जागरण व भंडारे का आयोजन करते हैं। बताया कि गदरपुर, बाजपुर और रामनगर में बुक्स समाज के लोग रह रहे हैं। माघ से फाल्गुन तक इन गांव के प्रत्येक घर में चिरागी (पूजा) कर उठावनी होती है। बुक्स समाज के लोग चैत्र नवरात्र में अष्टमी, नवमी, दशमी पर पूजा अर्चना कर मां का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

## 12 वां उप ज्योतिर्लिंग

चैती मेदान परिसर में ही महाभारत कालीन मोटेश्वर महादेव मंदिर का शिवलिंग 12 वां उप ज्योतिर्लिंग है। शिवलिंग की मोटाई अधिक होने के कारण यह मोटेश्वर महादेव मंदिर के नाम से विख्यात है। स्कंद पुराण में भगवान शिव ने कहा कि जो भक्त कांवड़ कंधे पर रखकर हरिद्वार से गंगा जल लाकर यहां चढ़ाएगा उसे मोक्ष मिलेगा।

## हाईकोर्ट के बाद बलि प्रथा पर लगी रोक

चैती मेला में मां बाल सुंदरी से मन्तव्य मांगने वाले लोग मन्तप पूरी होने पर बकरों की बलि देते थे, लेकिन वर्ष 2009 में उत्तराखंड हाईकोर्ट द्वारा बलि प्रथा पर रोक लगाने के बाद मंदिर में बलि प्रथा पर पूरी तरह रोक लगा दी गई। हालांकि लोग आज भी मन्तव्य पूरी होने पर बकरे लाते हैं, लेकिन उन्हें छेड़ जाते हैं।



बलि के तेल में पकने वाला चुकी

## डाकू सुल्ताना से लेकर फुलन देवी तक आते थे नखासा बाजार में घोड़े खरीदने

चैती मेले में लगे आ रहे नखासा बाजार का भी अपना इतिहास है। मुख्य पंजा विकास अभिनेत्री के मुताबिक पंजा परिवार नौ पीढ़ियों से भी अधिक माता की सेवा करता आ रहा है। इस दौरान लगने वाले चैती मेले में नखासा बाजार भी लगता था। जहां राजस्थान, गुजरात समेत यूपी के अन्य जगहों से घोड़ों की कई तरह की नस्ल बेचने को लाई जाती थीं। पंजा अभिनेत्री ने बताया कि नखासा बाजार में मशहूर डाकू सुल्ताना और फूलन देवी भी घोड़े खरीदने आया करते थे।



ऊधम सिंह नगर के काशीपुर में कुंडेश्वरी मार्ग पर मां बाल सुंदरी मंदिर स्थित है। यह 52 शक्तिपीठों में से एक है। माता का यह नाम उनके द्वारा बाल रूप में की गई लीलाओं की वजह से पड़ा है। इसे पूर्व में उज्जैनी एवं उनकी शक्तिपीठ के नाम से भी जाना जाता था। यहां प्रतिवर्ष चैत्र मास की नवरात्रि में चैती मेले का आयोजन किया जाता है। धार्मिक एवं पौराणिक काल में इसे गोविषाण नाम से भी जाना जाता था। महाभारत काल का इतिहास समेटे काशीपुर में मुगल शासक औरंगजेब जैसे मूर्तिभंजक शासक को नतमस्तक होना पड़ा था। यहां उज्जैनी शक्तिपीठ के नाम से प्रसिद्ध मां भगवती बाल सुंदरी का मंदिर शक्तिपीठ भी माना जाता है। किवंदतियां हैं कि औरंगजेब की बहन का स्वास्थ्य खराब हुआ, तो मां बाल सुंदरी ने उनकी बहन को सपने में दर्शन दिए। तब उन्होंने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।



## जॉब का पहला दिन

मेरी नौकरी का पहला दिन मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण और यादगार दिनों में से एक था। उस दिन मेरे भीतर उत्साह, जिज्ञासा और हल्की घबराहट तीनों का अनोखा मिश्रण था। जब मैं पहली बार ऑफिस पहुंची, तो सब कुछ नया और अलग-सा लगा। लोगों की तेज चाल, कंप्यूटर की लगातार चलती आवाजें और हर किसी का अपने काम में डूबा होना। यह सब मेरे लिए एक नया अनुभव था। पहली बार किसी न्यूज रूम में मौजूद होना अपने आप में रोमांचक था। वहां का माहौल बेहद तेज और व्यस्त था, जहां हर खबर को समय पर और सटीक तरीके से तैयार करना सबसे बड़ी प्राथमिकता होती है। मुझे शुरुआत में यह समझने में थोड़ी कठिनाई हुई कि किस तरह हर व्यक्ति बिना समय गंवाए अपने-अपने काम में जुटा रहता है, लेकिन धीरे-धीरे मैं उस वातावरण को महसूस करने लगी। पहले ही दिन मुझे खबरें लिखने, तथ्यों की पुष्टि करने और उन्हें सही ढंग से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया से अवगत

## सीखने के सफर की शुरुआत

कराया गया। यह सब मेरे लिए बिल्कुल नया था। कभी जानकारी अधूरी मिलती, तो कभी समय की कमी के कारण उसे जल्दी से संकलित करना पड़ता। ऐसे में कई बार लगा कि यह काम मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है, लेकिन मैंने इसे एक अवसर के रूप में लिया और हर कठिनाई को सीखने का जरिया बनाया। दिनभर के काम के दौरान कई बार ऐसा महसूस हुआ कि समय बहुत तेजी से भाग रहा है और मैं उसे पकड़ने की कोशिश कर रही हूँ। फिर भी, मैंने खुद को संभाला और हर कार्य को समझने की पूरी कोशिश की। वरिष्ठों का मार्गदर्शन और सहयोग भी मुझे लगातार मिलता रहा, जिसने मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाया। इस पहले दिन ने मुझे सिखाया कि पत्रकारिता केवल खबर लिखने का काम नहीं है, बल्कि यह जिम्मेदारी, सतर्कता और धैर्य की परीक्षा भी है। सही निर्णय लेना और हर जानकारी को परखना इस क्षेत्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है। दिन के अंत में जब मैंने अपने काम को पूरा किया, तो एक अलग



भावना हब्बानी



ही संतोष की अनुभूति हुई। थकान के बावजूद मन में खुशी थी कि मैंने एक नए सफर की शुरुआत कर ली है। यह पहला दिन मेरे लिए न केवल एक अनुभव था, बल्कि एक प्रेरणा भी, जो आगे बढ़ने की राह दिखाता रहेगा।

# ‘परछाइयां’: साहिर लुधियानवी की सृजन स्थली

मुंबई कभी रुकती नहीं। यह शहर मानो समय की घड़कन पर दौड़ता रहता है-दिन-रात, बिना ठहरे, बिना थके। सड़कों पर भागती कारें, देर रात तक जगती रोशनियां और काम में डूबे लोग इस शहर की पहचान हैं, लेकिन जब आप जूहू की तरफ मुड़ते हैं और अरब सागर के किनारे पहुंचते हैं, तो अचानक सब कुछ बदल जाता है। शहर का शोर पीछे छूट जाता है। हवा में एक धीमी नमी है और लहरें एक अनवरत संगीत रचती रहती हैं। इसी शांत इलाके में छिपा है वह घर, जहां मशहूर शायर साहिर लुधियानवी ने अपने जीवन का लंबा और रचनात्मक समय बिताया। उस घर का नाम है- ‘परछाइयां’।



विवेक शुक्ला वरिष्ठ पत्रकार

‘परछाइयां’ की तलाश में- रास्ते में कई लोगों से पूछते हैं। कोई कंधे उचकाकर कहता है- ‘पता नहीं’। कोई मुस्कराकर आगे बढ़ जाता है, लेकिन जिद है उस घर को देखने की, जहां साहिर ने अनेक कालजयी गीत और गजलें लिखीं। दीवारों को छूने की, उन कमरों की हवा में सांस लेने की। चलते रहते हैं, गलियों से गुजरते हैं। अजीब संयोग जैसे ही पृथ्वी छोड़ देते हैं, रास्ता खुद खुल जाता है। अचानक एक बड़े, सलेटी रंग के शांत बंगले की नेमप्लेट पर नजर ठहर जाती है। काले अक्षरों में रोमन लिपि में लिखा है- ‘परछाइयां’। ‘परछाइयां’ अर्थात् साये। यह नाम पढ़ते ही साहिर की कई पंक्तियां जेहन में उभर आती हैं। उनकी शायरी में गहरी उदासी थी, पर वह उदासी निराशा नहीं, बल्कि संवेदना की रोशनी थी। यह बंगला लगभग पांच सौ वर्ग मीटर में फैला है। मुंबई में रहने वाले वास्तु विशेषज्ञ डॉ. जेपी शर्मा लाल धागेवाले साहिर साहब के बंगले को गुजरे कई दशकों को देख रहे हैं। वे बताते हैं कि ‘इसकी बालकनियों से कभी अरब सागर साफ दिखता होगा। ऊपर की मंजिलों में साहिर अपनी मां के साथ रहते थे। शाम



दलती, समुद्र से ठंडी हवा आती और कमरों में किताबों, कागजों और स्याही की हल्की गंध फैल जाती। यही वह जगह थी, जहां रातें जागती थीं और शब्द धीरे-धीरे कविता का रूप ले लेते थे।

**सृजन का माहौल और अमर गीत :** इस घर के दरवाजे दोस्तों के लिए हमेशा खुले रहते थे। फिल्मकार, संगीतकार, कवि और शायर यहां आया करते। कोई धुन गुनगुनाता, कोई राजनीति पर बहस छुड़ देता, तो कोई नई कविता सुनाता। साहिर चुपचाप सुनते, फिर अचानक एक पंक्ति कहते और कमरे में सन्नाटा छा जाता,

क्योंकि वह पंक्ति सीधे दिल में उतरती थी। इसी माहौल में कई अमर फिल्मी गीत जन्मे। जैसे ‘उड़े जब जब जुल्फें तेरी’ (फिल्म: नोटकी), जो प्रेम की मस्ती को बयां करता है, या ‘तुमसा नहीं देखा’ (फिल्म: तुमसा नहीं देखा), जिसमें साहिर की रोमांटिक संवेदना झलकती है। उनकी पंक्तियां आदर्शों की टूटन, समाज की विडंबना और प्रेम की कोमलता को एक साथ बोलती थीं। उनकी कलम विरोध भी करती थी और ईंसानियत की लो बचाए रखती थी। फिल्म प्यासा के ‘ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है’ जैसे गीत इसी घर की दीवारों में गुंजे होंगे, जहां सामाजिक अन्याय पर उनकी तीखी टिप्पणियां शब्दों में दलती थीं। या ‘अभी न जाओ छोड़कर’ (फिल्म: हम दोनों), जो प्रेम की उदासी और बेचैनी को इतनी गहराई से व्यक्त करता है कि सुनकर दिल भर आता है।

**मां के प्रति समर्पण और व्यक्तिगत जीवन :** साहिर का निजी संसार भी इसी घर में बसता था। उन्होंने विवाह नहीं किया। उनकी सबसे बड़ी ताकत उनकी मां सरदार बेगम थीं। कहा जाता है कि किसी भी बड़ी चर्चा या निर्णय से पहले वे मां की राय अवश्य सुनते थे। मेहमान बैठें हों, बहस चल रही हो- वे उठकर मां के कमरे में जाते और पूछते, ‘आप क्या सोचती हैं?’ मां के प्रति यह सम्मान उनके व्यक्तित्व की कोमलता को उजागर करता है। जब 1976 में उनकी मां का निधन हुआ, तो साहिर भीतर से खाली हो गए। चार वर्ष बाद, 25 अक्टूबर 1980 को दिल का दौरा पड़ने से उनका जीवन थम गया।

# नारी शक्ति की सशक्त मिसाल अंजू

नवरात्र का पावन पर्व शक्ति, साहस और समर्पण की आराधना का प्रतीक है। इसी भाव को साकार करती हुई डॉ. अंजू चौहान आज के दौर में नारी शक्ति की जीवंत मिसाल बनकर उभरी हैं। अपने ज्ञान, मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर उन्होंने न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे देश और देश का नाम रोशन किया है। डॉ. अंजू चौहान की सफलता की कहानी उनकी प्रारंभिक शिक्षा से ही शुरू हो जाती है। उनकी प्राथमिक व इंटरमीडिएट तक की शिक्षा पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, बाजपुर में हुई। बचपन से ही वह पढ़ाई में बेहद मेधावी रहीं और हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करती थीं। विद्यालय स्तर पर ही उनकी प्रतिभा और लगन ने यह संकेत दे दिया था कि वह भविष्य में कुछ

बड़ा हासिल करेंगी। शैक्षिक वातावरण उन्हें विरासत में मिला। वह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रेहटा के प्रधानाचार्य धूम बहादुर चौहान की पुत्री हैं, जिसके कारण शिक्षा और अनुशासन उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा। परिवार से मिले संस्कार और मार्गदर्शन ने उनके व्यक्तित्व को मजबूत आधार प्रदान किया। आगे चलकर उन्होंने डेटा साइंस में मानद डॉक्टरेट (केनेडी यूनिवर्सिटी ग्लोबल अवार्ड) प्राप्त कर एक नई पहचान बनाई। वह एक राष्ट्रीय बैंक में लाइफ फाइनेंशियल कंसल्टेंट, मनोवैज्ञानिक और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं। उनके कार्यों ने समाज के विभिन्न वर्गों को नई दिशा और प्रेरणा दी है।

## नवरात्र और नारी शक्ति का साकार रूप

नवरात्र में मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा होती है, जो शक्ति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक हैं। डॉ. चौहान का जीवन भी इन्हीं गुणों का प्रतिबिंब है। उन्होंने अपने ज्ञान से समाज को सशक्त किया और अपने कार्यों से यह साबित किया कि नारी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है।

## सम्मानों से सजी उपलब्धियां

डॉ. अंजू चौहान को देश रत्न पुरस्कार 2025, अदम्य नारी रत्न पुरस्कार 2025, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्रीय विशिष्ट पुरस्कार 2025, पीएम मोदी विजन ऑफ इंडिया 2025, राष्ट्रीय प्रतिभा पुरस्कार 2025 सहित कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा जा चुका है। यह सभी सम्मान उनके उत्कृष्ट कार्यों और राष्ट्र के प्रति समर्पण को दर्शाते हैं।

## नवरात्र का संदेश

नवरात्र हमें यह सिखाता है कि हर नारी में अद्भुत शक्ति निहित होती है। डॉ. अंजू चौहान इस सत्य का सजीव उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने परिश्रम और समर्पण से यह सिद्ध कर दिया कि नारी शक्ति असीमित है। इस नवरात्र, हमें भी डॉ. अंजू चौहान जैसी प्रेरणादायी शक्ति से प्रेरणा लेकर अपने भीतर की शक्ति को पहचानना और समाज व राष्ट्र के उत्थान में योगदान देना चाहिए।

## युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत

डॉ. चौहान की यात्रा यह संदेश देती है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत सच्ची हो, तो कोई भी बाधा रास्ता नहीं रोक सकती। वह आज के युवाओं, विशेषकर बेटियों के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं, जो अपने सपनों को साकार करना चाहती हैं।



-जीवन सिंह सैनी, बाजपुर